अमृत वाणी

धन उत्तम कर्मों से उत्पन्न होता है, प्रगल्भता साहस योग्यता व दृढ़ निश्चय से बढ़ता है, चतुराई से फलता फूलता है और संयम से सुरक्षित होता है। -विदुर,

नपुंसकता की सज़ा पर जल्द हो निर्णय

इससे अच्छी सजा किसी अपराधी के लिए क्या हो सकती है कि वह जीवन भर उसका दंश महसूस हो और उसे राह स्मरण दिलाता रहे कि उसने कौन सा अपराध किया था। अन्यथा अपराधिक चरित्र के लोग अक्सर सजा भुगत लेने के बाद यह भूल जाते हैं कि उन्होंने कोई अपराध किया था और उसकी सजा उन्हें मिली थी। इसलिए फिर से अपराधिक गतिविधियों में लिप्त होना भी उनके लिए मुश्किल नहीं होता। बलात्कार के दोषियों की बात तो और गंभीर है। उनता एक अपराध कई अपराधों के बराबर है क्योंकि उनके शोषण की शिकार पीड़ित पर एक साथ कई तरफा दुष्प्रभाव पड़ता है। इसलिए उनको हर हालत में ऐसी सजा मिलनी चाहिए जिसे सुनते ही रुह कांप उठे तथा जीवन भर अपने किए कर पश्चाताप करना भी उनके लिए कम हो। इस परिपेक्ष्य में सुप्रीम कोर्ट की महिला वकीलों की यह मांग कि बच्चों के साथ यौन शोषण जैसा जघन्य अपराध करने वालों को फांसी की सजा के साथ-साथ नपुंसक बनाए जाने का प्रावधान भी किया जाए सर्वथा उचित एवं समय की जरूरत है।

महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि जब तक इस अपराध के परिणामों को लेकर दहशत न फैले तब तक इस पर अंकुश लगाना आसान नहीं है। इन दिनों तेजी से बढ़ रही बच्चों से यौन शोषण के मामले इसका साक्षात उदाहरण है।

अच्छी बात यह है कि महिला वकीलों के इस आवेदन के परिपेक्ष्य में केन्द्र सरकार भी प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रेन फ्राम सेक्सुअल ऑफेंस में संशोधन को हरी झंडी दिखाने के बाद बलात्कारियों की सजा को लेकर एक बार फिर विचार कर रही है। प्रधानमंत्री कार्यालय ने बच्चों के साथ रेप करने वालों को नपुंसक बनाये जाने संबंधी याचिका महिला एवं बाल विकास मंत्रालय को उचित कार्यवाही के लिए भेजा है।

सुप्रीम कोर्ट की महिला वकीलों की संगठन की ओर से दायर याचिका में लगाया गया यह आरोप कि बच्चों के खिलाफ रेप और यौन शोषण के मामलों में बेहद तेजी से बढ़ोत्तरी हुई है इसलिए उचित कानून बनाने की तत्काल जरूरत है सर्वथा उचित एवं सही है। इसलिए इन मामलों में मौत की सजा और नपुंसक बनाए जाने के कानून पर जल्द निर्णय लिया जाना चाहिए। वर्तमान में आए दिन कहीं न कहीं ऐसी जघन्य और दिल दहला देने वाली खबरें आ रही है। कितने मासूमों की दर्दनाक मौत हो चुकी है जबकि कई बच्चियां दहशत में जीने को मजबूर हैं। उनके साथ उचित न्याय तो होना ही चाहिए। उससे भी बढ़कर गंभीर सवाल वर्तमान में कच्चा शिशुओं की सुरक्षा को लेकर उत्पन्न हो गया है। जो लोग ऐसा वीभत्स कृत्य कर सकते हैं वे तो दानव है। उनके अंदर की मानवीयता मर चुकी है। ऐसे लोग देश और समाज के लिए कलंक है। अत: उनके प्रति किसी प्रकार की दया या सहानुभूति का तो सवाल ही नहीं उठता। अत: जितनी जल्दी उनके लिए कठिनतम सजा का प्रावधान हो उतना ही अच्छा।

हमारे देश में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर पहले ही चारों ओर काफी आलोचना होती रही है अब बच्चों पर इस अत्याचार ने सारी दुनिया के सामने देश की शर्मसार कर दिया है। आज कोई भी मां अपनी बच्ची की सुरक्षा को लेकर आश्वस्त नहीं है। इसलिए देश को अगर इस चुनौति से निपटना है तो एक मात्र मार्ग ऐसे अपराधियों का अस्तित्व मिटाना ही हो सकता है।

शुभस्य शीघ्रम

निरंतर बढ़ते अपराध, दुराचार, भ्रष्टाचार की खबरों से अखबार स्याह हो चुके है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति , संस्कारों जीवन मूल्य पर लगा कलंक भारत की छवि को धूमिल कर रहा है विश्व पटल पर। आज भयाक्रांत है हमारी बेटियां, नन्ही बच्चियों, स्कूली छात्राओं के माता पिता अपने बच्चों की सुरक्षा को लेकर ,उनके सम्मान को लेकर , उनके आत्मगौरव और जीने के अधिकार को लेकर। जबकि भयाक्रांत होना चाहिए इन अपराधियों को , दुष्कर्मियों को और इन्हें ऐसा दंड मिले, ऐसी सजा मिले कि यह इस तरह के अपराध करने का विचार भी मन में लाएं लाने से पहले सौ बार सोचें।

आखिर यह स्थिति बार.बार क्यों आती है! कड़े कदम भी उठाए जाते हैं ,जन आक्रोश जब फूट पड़ता है तो दबाव में कानून बनाए जाते हैं , कहीं न कहीं कुछ लापरवाही, लचर व्यवस्था ,वोट की राजनीति, धर्म का अंधानुकरण व गलत इस्तेमाल, लाल फीता शाही और दीर्घ कागजी कार्यवाही।

सच कहा गया है कि जब राजनीति लड़खड़ाती है तो साहित्य ही उसे संभालता है। अगर दलगत , वोट बैंक , धर्म, जाति के आधार पर फूट डालो शासन करो के सिद्धांत का पालन करती हुई राजनीति अपने धर्म,कर्म और स्वच्छ व उच्च उद्देश्यों से भटक रही है तो निरंतर आवाज हमें उठानी ही पड़ेगी।

क्यों सदाचार ,धैर्य ,मर्यादा ,नैतिकता , रिश्तो . संबंधों की मर्यादा की सीमा लांघ रहे हैं लोग! यह जहालत ,हैवानियत कहां से ! दोष कोई इंटरनेट को, मोबाइल को, सोशल साइट्स को भी दे रहा है लेकिन हर अच्छी चीज के साथ, कुछ बुराइयां जुड़ी हैं।हम हर चीज का इस्तेमाल अच्छे उद्देश्यों के लिए नहीं कर सकते क्या! कभी लगता है कि नीतिविदों के हाथों में इस प्रकार की स्वतंत्रता ब्रह्मंद के हाथ में उस्तरेए की तरह है , जिसका इस्तेमाल करने में उन्हें सही और गलत का विवेक उत्पन्न नहीं हो रहा और वे इन सुविधाओं का गलत उद्देश्यों के लिए उपयोग कर रहे हैं।

जिस तरह सारे नैतिक मूल्य , अपनी सभ्यता, संस्कृति,मर्यादा को पर धकेल, उनकी जिंदगी से पलायन कर रहे हैं, उसी के साथ उड़न छू हो रहा है उनका विवेक ,जिससे सही और गलत का फैसला होता है।

कानून बनाए जाते हैं उस के तुरंत बाद ही इस तरह के अपराध , दुराचार, दुष्कर्म, भ्रष्टाचार की खबरें आती रहती है।लोगों को उन कानूनों का ज्ञान नहीं है कि इस तरह के अपराध करने पर सजा कितनी कड़ी में सकती है ! कुछ अनिवार्य कदम उठाया जाने चाहिए, हर गली चौराहों ,पब्लिक प्लेस, पर पोस्टर लगाए जाएं, जिनमें दुराचार , भ्रष्टाचार के विरुद्ध कड़ी सजा का पूरा विवरण हो, कि हर आंख उसको देख सके, पढ़ सके और समझ सके, कि जो मनोविकारी,मानवता को ,संबंधों को लज्जित करने वाले वहशी ,क्रूर अपराध करते हैं उन्हें फांसी पर लटकाया जा सकता है और कठोरतम दंड दिया जा सकता है।

व्हाट्स एप, फेसबुक पर इतने सारे सद विचार रोज दिए जाते हैं।कितने लोग इनसे कुछ सीख रहे हैं ! कितने लाभावित हो रहे हैं ! यह अनिश्चित है ,लेकिन यह निश्चित है अगर इन सोशल साइट का उपयोग ऐसे कानूनों ,दंड के प्रचार प्रसार में भी किया जाए तो लोग मिलने वाले दंड के प्रति जागरुक होंगे।

इसी तरह मेसेज द्वारा भी लोगों को ये खबरें मिलती रहे और वह कानून से अंजान न रहें।

अनपढ़, झुग्गी झोपड़ी वाले, आवारा लड़कों को भी काउंसलिंग की जरुरत है।उन्हें निगरानी पर रखा जाना चाहिए। असुरक्षित स्थानों, एकांत स्थलों पर निरंतर पेट्रोलिंग की जानी चाहिए। शिक्षा बहुत कीमती है।सही गलत का विवेक प्रदान करती है शिक्षा एक स्तर तक, हर नागरिक के लिए आसानी से सुलभ होनी चाहिए।

हर क्लास में एक अनिवार्य पाठ नैतिक शिक्षा का हो और उसमें कुछ व्यवहारिक प्रयोग भी। बचपन से ही नींव मजबूत हो तो मर्यादाओं ,संस्कारों, नारियों का सम्मान, धैर्य, अनुशासन,सदाचरण सहानुभूति, संवेदनशीलता, बेहतर जीवन मूल्यों ,विवेक सम्मतता को जिंदगी में ढ़ालना सीख जाएं।

स्कूली बच्चियों को दुराचारियों से बचाने के लिए उन्हें सप्ताह में एक बार शनिवार को स्कूल में आत्म रक्षा के गुर सिखाए जाएं। कराटे , ताइक्वांडो ,निशाने बाज़ी ,आदि आत्म रक्षा संबंधित दाव .पेंचों की बाकायदा ट्रेनिंग दी जाए। जैसे खेल का एक अनिवार्य पीरियड कर दिया गया है यह एक उचित कदम है, इसी तरह उन्हें मानसिक , शारीरिक रूप से सक्षम बनाने के लिए पर्याप्त व्यायाम ,योगा , ध्यान आदि का प्रशिक्षण शालाओं में दिया जाए।

हर छात्रा के मोबाइल में सेफ्टी एप्स् जरूरी है अगर वो कहीं जाती हैं, प्रतिकूल परिस्थितियों में पड़ जाती हैं ,संकट में फंस जाती है तो उसके नजदीकी और पुलिस उनकी लोकेशन का पता लगा सके और आवश्यक सहायता तुरंत पहुंचाई जा सके। हां एक बात और भी जरूरी है पारिवारिक स्तर पर हर माता.पिता का यह कर्तव्य है कि वह अपने बढ़ते हुए बेटे को महिलाओं का सम्मान और उनसे सद्व्यवहार करना सिखाएं, उन्हें संवेदनशील बनाएं। महिलाएं हर क्षेत्र में बहुत आगे हैं नैतिक ,आध्यात्मिक रूप में तो हमेशा से ही आगे हैं। भारतीय पुरुषों को भी अपनी संकीर्ण मानसिकता को सुधारना होगा और महिलाओं के वर्चस्व, योग्यता, प्रतिभा को,अपने अहंकार से पराजित करने का, अपने शारीरिक बल के गलत इस्तेमाल से उन पर जुल्म ,अत्याचार और अन्याय ,शोषण करने का सपना देखना बंद करना होगा। संकीर्ण मानसिकता और निम्न सोच को बदलना होगा। महिलाओं का जो उच्च स्थान है ,मान है उसे उन्हें गरिमा सहित प्रदान करना है। मानवतावादी दृष्टिकोण को अपनाना होगा। तभी एक अपराध मुक्त, स्वस्थ, विकसित समाज की कल्पना की जा सकती है, जहां बिना किसी लिंगभेद के, संकीर्णता के सभी राष्ट्र और समाज के विकास में अपना योगदान दे सकें।

आज इतनी अधिक मात्रा में दुष्कर्म, दुराचार के केस कोर्ट में पहलों में दबे पड़े हैं और अपराधी खुलेआम अपनी जिंदगी मजे में बिता रहे हैं यह बहुत अफ्सोस जनक है। ऐसे दुष्ट अपराधियों के विरुद्ध सभी मामलों को शीघ्र निपटाने हेतु त्वरित कार्यवाही कर सजा दी जानी चाहिए, अतिरिक्त न्यायाधीशों की नियुक्ति की जाए जिसमें महिला न्यायाधीशों की संख्या अधिक हो।

कभी लगता है कि भारतीय पुरुषों को किसी भी काम में जाने से पहले कुछ समय के लिए मिलिट्री ट्रेनिंग दी जानी चाहिए जैसे प्रंस में मिलिट्री ट्रेनिंग अनिवार्य है इसी तरह मिलिट्री तभी लापरवाही ,अनुशासनहीनता , दुष्कृत्य , सब चलता है, जैसी निम्न मानसिकता खत्म होगी। उपरोक्त सभी बातें अमल में लाना बहुत जरुरी है ,तभी समाज से यह कलंक मिटेगा और भारत का विश्व पटल पर छवि सुधार आएगा क्योंकि ऊपरी चमक दमक, छद्म विकास की उद्घोषणा, खोखली नींव की तरह है जिस पर कोई मजबूत इमारत नहीं बनाई जा सकती! समाज के आंतरिक ढांचे को नैतिक और मानसिक स्तर पर विकसित और मजबूत किया जाना जरुरी है , सभी पूर्ण विकास माना जाएगा।

अनुपमा अनुश्री
(ये लेखक के अपने विचार है)

भ्रष्टाचार के गुलगुले लपककर निगलने की नैतिकता

आरएसएस समर्थित नरेन्द्र मोदी और अमित शाह की भाजपा ने नैतिकता मामले में कांग्रेसीकरण कर लिया है। देशभर में जिस दागदार लोगों को भाजपा ने अपनी बाहों में समेटने का सिलसिला चला रखा है। उससे आज उसे तात्कालिक लाभ भले मिल जाए लेकिन दीर्घकाल में भ्रष्टाचार के गुलगुले लपक कर निगलने और नैतिकता का ढोंग करने के खामियाजा उसे भुगतना पड़ेगा। ताजा उदाहरण यह भ्रष्टाचार के आरोप में सात साल तक कर्नाटक की राजनीति से वनवास झेलने वाले रेड्डी बंधुओं की भाजपा में वापसी हो गई है। इससे यह आकलन चल पड़ा है कि कर्नाटक चुनाव के राजनीतिक समीकरणों में इससे क्या बदलाव आयेगा कर्नाटक और आन्ध्रप्रदेश में अवैध खनन मामले में करीब दो साल जेल में रहने वाले पूर्व मंत्री जनार्दन रेड्डी के भाई और रिश्तेदारों को बीजेपी विधानसभा चुनाव में अपनी ओर से पेश कर रही है। कहते हैं कि रेड्डी बंधुओं ने विधानसभा की सात सीटें भाजपा से मांगी हैं।

राजनैतिक हलकों में याद दिलाया जा रहा है अभी दो सप्ताह पहले ही बीजेपी अध्यक्ष अमित शाह ने कहा था कि उनकी पार्टी का रेड्डी बंधुओं से कोई लेना.देना नहीं है। लेकिन पार्टी की ओर से जारी की गई उम्मीदवारों की सूची में रेड्डी बंधुओं में सबसे बड़े जी करुनाकर रेड्डी को पार्टी ने हरादनहल्ली सीट से चुनावी मैदान में उतार दिया। उनके करीबियों में बी श्रीरामुलु को मोलाकलमुरु सीट, जी सोमशेखर रेड्डी को बेल्लारी सिटी सीट श्रीरामुलु के रिश्तेदार सन्ना फकीरप्पा को बेल्लारी ग्रामीण सीट और टीएच सुरेश बाबू को कंपली सीट से टिकट दिए गए हैं। बीजेपी ने एकटर और जनार्दन रेड्डी के करीबी साईकुमार को भी बागेपल्ली से टिकट दिया है।

स्वयं भाजपाई खेमे में कहा जा रहा है कि अमित शाह के मिशन 150 के कर्नाटक का चुनाव लड़ने वाली बीजेपी के लिए रेड्डी बंधुओं को साथ लेना मजबूरी था, क्योंकि आंध्र प्रदेश की सीमा पर बसे कर्नाटक के इलाकों के रेड्डी वोट बैंक को साधने के लिए इनका साथ आना जरूरी था। जिन सीटों पर रेड्डी वोट बैंक हैए उस सभी सीटों पर बीजेपी ने रेड्डी ब्रदर्स के हाथ में ही प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर कमान सौंपी है। इसके अलावा सिद्धारमैया के अहिंदा वोट बैंक को साधने के लिए बीजेपी ने सांसद होने के बावजूद श्रीरामुलु को मोलाकलमुरु सीट से उम्मीदवार बनाया है। काहा जा रहा है कि पार्टी आलाकमान को रेड्डी बंधुओं के पक्ष में लाने के लिए श्रीरामुलु ने काफी मेहनत की है।

याद आता है कि कर्नाटक में वर्ष 2013 में हुए विधानसभा चुनावों के दौरान जनार्दन रेड्डी जेल में थे और उनका माइनिंग का साम्राज्य खतरे में पड़ा गया था। बीजेपी ने भी उन्हें पार्टी से बेदखल कर दिया था और उनके करीबी बीण् श्रीरामुलु ने बीएसआर कांग्रेस नाम से अपनी अलग पार्टी बनाई थी, जिसने उस चुनाव में तीन सीटों पर जीत हासिल की थी।

2014 तक पहुंचते.पहुंचते बीजेपी से अलग होकर बनी येदियुरप्पा की केजेपी और श्रीरामुलु की बीएसआर कांग्रेस की बीजेपी में वापसी हो गई। 2014 में हुई लोकसभा चुनाव में इसी के कारण राज्य की 28 सीटों में से 17 पर बीजेपी ने जीत हासिल की। उन चुनावों के दौरान बीजेपी ने रेड्डी बंधुओं से दूरी बनाकर रखी थी। लेकिन आगामी विधानसभा चुनाव के लिए बीजेपी ने जिस तरह से रेड्डी वोट बैंक को साधने की चाल चली है, उससे बीजेपी को फायदा हो सकता है। लेकिन सार्वजनिक जीवन में दागियों को प्रतिष्ठित किया जाना अंततरू लोकतंत्र को कलंकित ही करेगा।

अजित वर्मा
(ये लेखक के अपने विचार है)

राजकाज

अपनी ही बात काटते मोदी

कर्नाटक विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कुछ बातें ऐसी कह जाते हैं जिनका एक.दूसरे से दूर.दूर तक वास्ता नहीं होता है, बल्कि पहली कही गई बात दूसरी बात के जरिए काटी जा सकती है। इस संबंध में उदाहरण देते हुए कहा जा रहा है कि प्रधानमंत्री मोदी ने कर्नाटक में कहा कि प्रधानमंत्री बनने के तुरंत बाद मुझे इस धरती के वंदन का सौभाग्य मिला था। यहां के हर हिस्से में मुझे भाजपा के लिए उत्साह दिखता है। ये कर्नाटक की धरती, समाज और देश के लिए दिन.रात सोचने वाले संतों की धरती है। गरीब से गरीब व्यक्ति के जीवन में बदलाव कैसे आएं, इसके लिए यहां के संतों ने जो काम किए हैं, वे देश के लिए प्रेरणा देने वाले हैं। इसके बाद उन्होंने कह दिया कि किसानों की वर्तमान मुश्किलें कांग्रेस की पुरानी नीतियों के कारण हैं।

शांति सद्भाव के लिए खतरा

गुरुग्राम से खबर आ रही है कि दक्षिणपंथी संगठनों से जुड़े लोग पिछले माह 20 अप्रैल को नमाज पढ़ने वालों को कुछ रोक रहे हैं, जिसके बाद विवाद की स्थिति उत्पन्न हुई है। इसके साथ बताया गया कि ये लोग अतुल कटारिया चौक, सिकंदरपुर, इफ्को चौक, एमजी रोड और साइबर पार्क के नजदीक स्थित एक प्लॉट पर भी गए, जहां नमाज के लिए लोग एकत्रित हुए थे, लेकिन इनके विरोध के चलते वो वापस चले गए। दरअसल हकीकत में ट्रेफिक जाम की स्थिति से बचने के लिए चिह्नित जगहों में नमाज अदा नहीं करने की बात कही गई थी, लेकिन जिस तरह से लोगों ने विरोध शुरु किया उससे विवाद खड़ा हो गया। नेहरू युवा संगठन वेलफेयर सोसाइटी चैरिटेबल ट्रस्ट के प्रमुख वाजिद खान ने पुलिस प्रमुख के साथ हुई मीटिंग का हवाला देते हुए पूरे में को सामने रखा है। वहीं कुछ लोगों का कहना है कि चंद मिनटों में नमाज हो जाती है।

हिंसा आदि बढ़ने के कारण

यदि मनुष्य सामाजिक और सांसारिक प्राणी हैं तो उसमे हिंसा आदि का होना लाजिमी हैं। क्योंकि मानव हमेशा मोह के वश हर समय या तो गरा करता हैं या द्वेष, राग द्वेष के कारण हिंसादि पापों का होना अनिवार्य है। यदि वह धार्मिक होता है तो कुछ क्षण के लिए उसमे शुद्ध भाव आते हैं जैसे वर्षा ऋतु में जब बिजली कड़कती है और बिलीन हो जाती है । हिंसादि के अंतर्गत हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह ये पाप के साथ चार प्रकार की कषायों को भी स्वीकारता है वे हैं क्रोध मान एमाया लोभ। इस प्रकार से मनुष्य हिंसाजन्य प्रवत्ति को धारण करता है और इसका इलाज़ अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह है। विश्व के अंदर जितने भी राष्ट्र हैं उनको एक कतार में खड़ा कर दिया जाय तो कानून की पुस्तकें कश्मीर से कन्या कुमारी तक हो जाएंगी जो मात्र पंच पापों के लिए बने हैं। पर उनमे सुधार की सुविधा नहीं बताई गयी है या रोक थाम कैसे करे। जैसे आयुर्वेद शास्त्र में सिद्धांत हैं की स्वस्थ्य व्यक्ति स्वस्थ्य कैसे रहे और आतुर रोगी को रोगमुक्त कैसे करे। चिकित्सा विज्ञान में सबसे पहले शरीर रचना और क्रिया सामान्य कितनी होती हैं और फ़िर विकृति विज्ञानं में विकृति बताई जाती है। इसी प्रकार वर्तमान में जितनी भी हिंसादि घटनाएं हो रही हैं उसके बारे में समझे तब हम रोकथाम पर विचार कर सकते हैं। बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता। आज हिंसा और विलासिता के कारण हमने जो भौतिक सम्पदा प्राप्त कर उन्नति का भवन बनाया है वह बहुत दिनों तक नहीं टिकेगा। यहाँ यह भी स्मरण रखना होगा कि जीव, हिंसा और मांस विक्रय द्वारा शासन जितना भी धन कमाता है वह भीषण नदियों के बाढ़, अनावृष्टि और प्राकृतिक प्रकोपों के द्वारा क्षण भर में समाप्त हो जाता है। पाप के द्वारा सम्पत्ति शांति और समानस्य का विनाश हो जाता हैं। त्यागेन अप्रतत्व आनशुरू त्याग के द्वारा अमृतत्व की प्राप्ति होती हैं। सुकरात के कहा जितनी जरूरतों को तुम कम कर सकोगे, उतना ही तुम परमात्मा के सदृश्य बनोगे। बाज़ार में जाकर देखकर सोचता था इनमे से किन.किन पदार्थों के बिना मेरा काम चल सकता हैं, समाज में त्यागी पुरुषों में वृद्धि होगी तब राष्ट्र उन्नत होता हैं। आज त्यागियों का सेल्फलेस का स्थान सेलफिश स्वार्थी लोगो ने ग्रहण किया वे स्वार्थी लोग मछली बेचने का काम करने लगे सेल.फिश। इस देश में हिंसा के कारण जनता दुखी हैं। यह बड़ी विचित्र बात है कि हम जितने अहिंसक के रूप में जाने जाते हैं उतने हिंसक हैं। जैसे कोई दुबला मनुष्य मोटा होने के लिए शरीर में सूजन आने से मोटा महसूस करता हैं उससे दुबला अच्छा ,जितना हम भौतिक विकास से सुखी हो रहे होते तो उसका अनुभव हमें क्यों नहीं हो रहा हैं हर कोई चिंतग्रस्त हैं आज महगाई का ज्वालामुखी इतना अधिक धधक रहा हैं की य.. देश हुआ आजाद अब कीमत भी आजाद जी भर बढ़ने दो उनसे क्यों करते हो फरियाद। जब मनुष्य भोग विलास की ओर कदम बढ़ाता हैं और कुछ समय के बाद पतन को प्राप्त होता हैं। जो जीतता हैं उसे हारने का भय सताता हैं। विलासपुरी का निवासी विकासपुरी से दूर होता हुआ विनाशपुर के निकट पहुँचता हैं। विजय जनित आनंद क्षत्रिम हैं। हैं बहारे बाग़ दुनिया चंद रोज, देख लो इसका तमाशा चंद रोज। आज हम देख रहे हैं की किसी भवन की नींव में मुर्दा डाला जाय और ऊपर से दया का देवता का मंदिर बनाया जाय तो क्या उस स्थान पर भगवती अहिंसा का निवास होगा। दया के देवता का मंदिर की नींव में रक्त नहीं प्रेम का अमृत सेचा जाना चाहिए। असली आनंद का भण्डार बड़े भवनों के भौतिक विकास केंद्रों में नहीं हैं। आत्मा को महान बनाने में व्यक्ति और राष्ट्र का हित हैं। शासन ने नागरिकों के घरों की छतों को ऊँचा करने में राष्ट्र की उतनी सेवा नहीं करसकते जितनी की उनकी आत्मा को विशाल बनाकर कर सकते। जो जितना संग्रह करता हैं उसकी उतनी अधिक बैचेनी होती हैं रू. चाह घाटी चिंता हटीए मनुआ बेपरवाह जिन्हे कछु नहीं चाहिए वे शाहनपति के शाह। आज सब अरब खरब पति बनने की होड़ में लगे हैं और कुछ लोगों के पास दुनिया की आधी दौलत हैं और आज भी विकास के नाम पर दो जून की रोटी और सर पर छत के लिए तरस रहे हैं अमल में जिंदगी बनती हैं, जन्नत भी जहन्नुम हैं। ये खाकी अपनी फ़ितरत में एन नूरी हैं न नारी हैं । यदि मानव सिर्फ अपना मानव धरम अपनाले तो दानवीय प्रवत्ति पर अंकुश लग सकती हैं पर आज समाज में ध्या मानव की सोच ध्यानसिकता में इतना बदलाव आ गया हैं की उसने अपनी दूषित वृत्ति को अपनाकर स्वयं अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारी। आर्थिक दौड़ के पीछे मनुष्य इतना भाग रहा हैं जिस कारण नैतिक अनैतिक कार्यों का कोई भान नहीं। इस कारण आज कुछ भी करने को तैयार हैं। इस एक पाप के कारण सब पाप करता हैं। उसे धन के लालच में किस्से की हत्या करना आम बात हो गयी उसके कारण झूठ का प्रचलन इतना आधी हो गया की मोबाइल क्रांति ने इसका दिग्दर्शन बहुलता से कराया है। आज अपने निजियों से भी वह छल कपट करने से नहीं चूकता। चोरी, डकैती, राहजनी, नकबजनी, धोखाधड़ी का बोलबाला चल रहा हैं और आज से नहीं सनातनी मानवीय दुर्बलता यौन अपराधों की रही हैं पर आज मोबाइल, इंटरनेट और मीडिया के कारण प्रचुरता से प्रसार प्रचार होता हैं और यह अपराध अब अभानवीय हो चुका। इसने संबंधों को तार तार कर दिया। वर्तमान में यह संक्रमण रोग होता जा रहा हैं जो असाध्यता की ओर जा रहा हैं और आज जमाखोरी, अधिक संचय की प्रवत्ति के कारण हम इतने अमर्यादित होते जा रहे हैं की हर शख्स दुनिया की दौलत अपने पास रखना चाहता हैं पर मिलता हैं उसे अपने पुण्य के आधार पर। इन पापों का समाधान हमारे पास हैं। जितने जितने हम अपने आप में नैतिक। धार्मिक होंगे उतने हम सुरक्षित होंगे। धरम व्यक्गत होता हैं ना की सामूहिक पर हम इसे सामूहिक मानकर कुछ भी करने को तैयार हैं और हमें राजनीती में स्वच्छ आचरण की जरुरत हैं सिर्फ बातों से नहीं पर चारित्र में। वैसे ये सब बातें आज के समय में अर्थहीन हैं पर समाधान धार्मिकता ध्नैतिकता से ही मिलेगा।

सुखी रहे सब जीव जगत के कोई कभी न घबरावे
बैर .पाप अभिमान छोड़ जग नित्य नए मंगल गावे ।
ईति भीति व्यापे नहीं जग में वृष्टि समय पर हुआ करे
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी न्याय प्रजा का किया करे।
रोग, मरी, दुर्भिक्ष न फैले प्रजा शांति से जिया करे
परम अहिंसा धरम जगत में फैल सर्वहित किया करे।
जैसा खाएंगे अन्न वैसा होगा मन, जैसा पियेंगे पानी वैसी होंगी वाणी।
नीम बोयेंगे और इक्षु कहाँ से पाएंगे । हिंसा जनित जीवन से सुख कहाँ से पाएंगे
त्यागें इन पापों को अपनाओ धरम धुरा को।

डॉ. अरविन्द जैन
(ये लेखक के अपने विचार है)